ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

हिन्दी का प्रवासी साहित्य : एक मूल्यांकन (विशेष सन्दर्भः डॉ. कमल किशोर गोयनका)

Overseas Literature of Hindi: An Evaluation (Special Reference: Dr. Kamal Kishore Goenka)

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

कमलेश कुमार मेहरा
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान, भारत

सियाराम मीणा
सह आचार्य
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय मूल के लोग विश्व के विभिन्न देशों में फैले हुए हैं। विदेशों में रहते हुए भी हिन्दी लेखकों ने हिन्दी साहित्य को जन–जन तक पहुँचायॉ हैं प्रवासी साहित्य अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोंण, परिस्थिति और सृजन–प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिन्दी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिन्दी–संसार में अपना योगदान किया हैं। भारत में रचे जाने वाले हिन्दी सहित्य से यह प्रवासी हिन्दी साहित्य संवेदना, परिवेश और सरोकार से एकदम भिन्न हैं, क्योंकि उनकी चिंताएं, समस्याएं तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न हैं। इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्पवूर्ण हैं– एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता हैं और हिन्दी साहित्य में कुछ नया जोड़ता हैं, दूसरे वह हिन्दी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रखता हैं ।

People of Indian origin are spread in different countries of the world. Despite being abroad, Hindi writers have made Hindi literature accessible to the people. Pravasi literature has contributed to the Hindi-world by giving overseas Hindi literature a fundamental form due to its unique sensation, vision, situation and creation process. This migratory Hindi literature is completely different from the sensations, surroundings and concerns of Hindi literature created in India, because their concerns, problems and conflicts are different from those of the author of India. In this way, Hindi diaspora literature is important in two respects - one he keeps his originality and uniqueness and adds something new to Hindi literature, secondly he makes an important contribution in making Hindi literature global.

मुख्य शब्द : प्रवासी, संवेदना, सरोकार, संस्कृति, विधुप्यिकी, समन्वय, विरक्त, पाण्डुलिपि, नोस्टाल्जिया।

Expatriate, Sensation, Concern, Culture, Methodology, Coordination, Detachment, Manuscript, Nostalgia.

प्रस्तावना

हिन्दी का प्रवासी–साहित्य अब एक आन्दोलन नहीं, बल्कि एक वास्तविकता हैं। और हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा का ही अंग हैं,जैसा दलित एवं आदिवासी–साहित्य। यह इक्कीसवीं सदी का नया साहित्य विमर्श हैं। हिन्दी में प्रवासी साहित्य का आगमन यद्यपि बीसवीं सदी में ही आरम्भ हो गया था, किन्तु भूमण्डलीकरण के प्रवासी विमर्श को नई शक्ति, नई ऊर्जा और नई सार्थकता प्रदान की हैं। हिन्दी के इस प्रवासी–साहित्य के 'प्रवासी' कहलाने और पहचान पर कोई भी आपति निरर्थक हैं, क्योंकि यह नामकरण अब इतना प्रचलित एवं स्वीकृत हो चुका हैं। कि इसे बदलना अब संभव नहीं है और भारतेतर देशों में रहकर कोई भारतीय हिन्दी में रचना करेगा तो वह देश विदेश में सर्वत्र हिन्दी का प्रवासी साहित्य ही कहलायगा। परन्तु अनेक जन इस संकल्प से परिचित नहीं हैं। प्रवासी किसे कहते हैं? प्रवासी साहित्य प्रवासी भारतीय साहित्य अथवा प्रवासी हिन्दी साहित्य किसे कहते हैं? इसका स्वरूप कैसे होता हैं? इसकी सृजनात्मकता किन में होती हैं? हम किन्हें प्रवासी साहित्यकार कह सकते हैं? अनेक प्रश्न उभरकर आते हैं? विद्वजन सोचते रहे। विचार–विमर्श जारी रहा। पत्र – पत्रिकाएँ निकलती रही और अनेक उत्तर सामने आते गए। प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग हैं। इन

पैंतीस–चालीस वर्षों में नवीन विधुप्यिकी के तकनीक विकसित हुए। प्रौद्योगिक चरम सीमा लांघती गयी तो यह साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया। भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता हैं और जिन्होंने हिन्दी को केन्द्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिन्दी में लिखा हैं वे प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध प्रवासी साहित्य हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खण्डकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ हैं। प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी श्लाघनीय हैं। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति –मूल्य मिथक इतिहास सभ्यता के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा हैं। हिन्दी को प्रवाहित रखा जिंदा रखा। इन साहित्यकारों में प्रमुख नाम हैं–साहित्यकार हरिशंकर आदेश। उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। वे 1966 से 1976 ई. तक वेस्ट इंडिज में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थें। वेस्ट इंडिज मे अपने कार्यकाल के दरमियान उन्होंने अवलोकन किया कि चर्चा द्वारा वहॉ बसे हुए भारतीयों (जिन्हें वर्षों पहले ब्रिटिश सरकार मजदूर बनाकर ले गए थें) पर धर्मेत्तर के लिए दबाव डाला जा रहा हैं महाकवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होंने इसे रोकने के लिए नामकरण से लेकर मृत्यु संस्कारादि धार्मिक कार्य के लिए वहॉ के निवासियों को प्रशिक्षित किया। आदेश जी के कारण वहॉ के लोगों को राहत मिली। उन्होंने वेस्ट इंडिज में 'भारतीय विद्या संस्थान' की स्थापना की हैं आदेश जी ने कहाकाव्य, खंडकाव्य, भगवतगीता का हिन्दी और अंग्रेंजी पद्यानुवाद, तीस नाटक, एकांकी, जीवनियॉ आदि की रचना की। 'हिन्दी' के प्रचार–प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणी हैं वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं जैसे विश्व कवि, महाकवि, आदि अनेक उनमें भारत–सरकार का प्रवासी 'भारतीय साहित्यकार' सम्मान प्रमुख हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाने और विकसित करने में मॉरिशस की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं मॉरीशस के लिए गर्व की बात एंव साहित्य को स्थापित करने के साथ –साथ उसे विकसित भी किया। मॉरीशस में हिन्दी

साहित्य के सृजनात्मक लेखन का कार्य किया और कविता आदि विधाओं पर लेखन कार्य मिल जाता हैं कुछ रचानाएँ मॉरिशस तथा भारतीय विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में लगी हुई । राज हीरामन, इन्द्र देव भोला, सूर्यदेव सीबोरत आदि हिन्दी साहित्य सृजन से जुड़े हुए हैं। हिन्दी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार का सर्वाधिक श्रेय प्रवासी हिन्दी लेखकों को जाता हैं। जिन्होंने विदेशियों को इसके प्रति आकर्षित किया। प्रवासी हिन्दी लेखक अपनी कृतियों एवं लेखन में देश और विदेश की विजय सक्सेना लिखती हैं कि वह लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्यवादी प्रवृतियों को प्रोत्साहन दे सकता हैं। आर्थिक जगत को भी देखे जा रहा हैं तथा सूचना क्रांति इस स्वप्न को साकार करती दिख पड़ रही हैं उसी प्रकार के साहित्य जगत में भी विश्व में इसका गुणगान रहा हैं। आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व भक्तिकाल के शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने वर्ग–वर्ग में बंटे समाज सम्प्रदायों और अपनी इस विशिष्टता के कारण ही (रामचरितमानस) एक सार्वकालिक और सार्वजनिक ग्रंथ बन गया हैं। प्रवासी भारतीयों की मानसिकता के संदर्भ में दुर्गा प्रसाद गुप्त लिखते है कि यह ऐसा भारतीय मन हैं जो एक तो दूसरी तरफ भौतिकता में उलझे उसके गरीब और पिछड़े वर्तमान पर आँसू बहाता हैं। उसके प्रति विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित अपनी धर्म और संस्कृति के प्रति तटस्थ रह पाते हैं और न निर्वेयक्तिक। फिर भी वे दोनों संस्कृतियों के प्रेमी आलोचक हैं।

भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से भिन्न हैं। भारतीय भोजन पौशाक धार्मिक आचार – विचार भाषा रीति–रिवाज पाश्चात्य संस्कृति हिन्दी साहित्य की एक कड़ी बन चुकी हैं। इस विषय में डॉ0 कमल किशोर गोयनका जी ने

कहा हैं :– हिंदी के प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य की एक सशक्त धारा बन चुकी हैं और इसे साहित्य की प्रमुख धारा में सम्मानपूर्ण स्थान देना चाहिए। हिन्दी के प्रवासी–साहित्य के प्रति गोयनका जी कि प्रतिबद्धता अब जगजाहिर हैं। प्रेमचन्द के बाद प्रवासी साहित्य ही इनका कर्म–क्षेत्र हैं। इसकी कहानी गोयन का जी की पहली मॉरीशस यात्रा 1980 से शुरू होती हैं, तब गोयन का जी भारत सरकार का प्रतिनिधि बनकर 'प्रेमचन्द शताब्दी समारोह' में भाग लेने के लिए मॉरिशस गए थें। वहॉ से लौटते समय उन्होंने मॉरिशस तथा प्रवासी–साहित्य पर काम करने का संकल्प लिया और परिणाम स्वरूप ये पुस्तकें प्रकाशित कीः–

1. अभिमन्यु अनतः एक बातचीत 1985,
2. अभिमन्यु अनतः समग्र कविताऍ 1998,
3. अभिमन्यु अनतः प्रतिनिधि रचनाऍ 1999,
4. मॉरिशस की हिन्दी –कहानियॉ 2000,
5. ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' काव्य–रचानवाली, 2003 तथा हिन्दी का प्रवासी साहित्य 2008 ।

यह क्रम चलता रहा और अभिमन्यु अनत के अमृत महोत्सव पर गोयनका जी ने 'नई धारा', 'वागर्थ', सद्भावना–दर्पण, नव–निकर्ष, प्रेरणा, समकालीन भारतीय साहित्य, समावर्तन रंग–संवाद, चक्रवाक, बहुरंग, पूर्वग्रह आदि 12–13 पत्रिकाओं के विशेषांक निकलवाए तथा कुछ का अतिथि–संपादन भी रहा । इस प्रकार छः महीने के समय में इतने विशेषांक किसी एक लेखक के जीवनकाल में इससे पहले नहीं निकले थें । गोयनका जी के प्रस्ताव पर अभिमन्यु अनत को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने 'मानद सदस्यता' प्रदान की, जो अकादमी का सर्वोच्चय सम्मान था। अकादमी ने उन्हें दिल्ली बुलाकर यह सम्मान प्रदान किया। यह भी यहॉ उल्लेखनीय हैं कि के के बिरला फांउडेशन ने गोयनका जी के प्रस्ताव पर उन्हे दो व्याख्यान के लिए दिल्ली बुलाया था। जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी तथा कृष्णकुमार बिरला भी उपस्थित थे। गोयनका जी ने बिरला जी से प्रस्ताव किया कि वे

फांउडेशन से मॉरिशस की 6 पुस्तकों को प्रकाशित करने के लिए अनुदान दिया और पूरे देश में उनका वितरण किया। इन सबका उल्लेख आत्म प्रंशसा के लिए नहीं हैं बल्कि पाठकों को यह बताना हैं कि हिन्दी के प्रवासी साहित्य के विकास के लिए कितने प्रकार से सहयोग किया जा सकता हैं इसी संदर्भ में यह भी बताना आवश्यक हैं कि गोयनका जी ने प्रवासी –लेखकों की लगभग 30 पुस्तकों की भूमिकाएँ लिखी हैं तथा उन्हें प्रकाशक भी उपलब्ध करवाये हैं।

गोयनका जी ने 'हिन्दी प्रवासी' साहित्य के तीन खंड़ो की योजना का उत्सव रायपुर के श्री विश्वरंजन और श्री जयप्रकाश मानस से जुड़ा हैं गोयनका जी ने भारतेतर देशों में रहने वाले अपने मित्र–लेखकों से सम्पर्क किया और प्रवासी–साहित्य पर काफी सामग्री एकत्र हो गई। गोयनका जी ने इनकी पाण्डुलिपी तैयार की यश पल्लिकेशंस के श्री शांतिस्वरूप शर्मा ने सहर्ष इसे प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया और इस प्रकार 'हिन्दी प्रवासी–साहित्य के ये तीन खण्ड (1) कविता (2) कहानी तथा (3) लेख, लघुकथा, डायरी, साक्षात्कार, पत्र आदि प्रकाशित हो सके हैं। 'हिन्दी प्रवासी –साहित्य' के खंड़ 'कविता' में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, कनाडा, खाड़ीदेश, दुबई, जर्मनी, डेनमार्क, नार्वे, नीदरलैण्ड, फीजी, मॉरिशस, तथा सूरीनाम आदि 12 देशों के 90 कवियों की कविताएँ संकलित की गई हैं हिन्दी की इन प्रवासी–कविताओं का संसार अब काफी व्यापक है और वह निरन्तर विकसित हो रहा हैं हमारा लक्ष्य यह हैं कि हिन्दी– पाठकों का इस प्रवासी हिन्दी –काव्य–संसार से साक्षात्कार कराया जाए और इसे हिन्दी की मुख्य काव्य धारा का अंक बनाया जाए।

इन कवियों को मुख्यतः दो भागों में बॉटा जा सकता हैं– गिरमिटिया देशों के कवि –अर्थात् फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम आदि देशों के कवि तथा अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया आदि पूँजीपति देशों के कवि, जो स्वेच्छा से बेहतर जीवन के लिए वहॉ गए। इन दोनों भागों के कवियों की काव्य–चेतना में अंतर मिलेगा; लेकिन एक बात सामान्य हैं कि ये सभी भारतीय मन के कवि हैं भारत अर्थात् स्वदेश आपको सर्वत्र दिखाई देगा । साथ ही दोनों में स्वदेश और परदेश का द्वन्द्व, दो भिन्न जीवन की परिस्थितियों में अंतर एवं नॉस्टेल्जिया का प्रबल भाव अनुभव होगा इन प्रवासी कविताओं का यह वैशिष्ट्य हैं कि वें अपनी रचना–देश के साथ अपनी मूल भूमि अपने मूल–देश की संस्कृति को भी अपनी स्मृति में तथा अनुभूतियों में जीते रहे हैं।

हिन्दी प्रवासी –साहित्य के दूसरे खंड़, 'कहानी' से संबंधित हैं; अर्थात् इसमें प्रवासी लेखकों की कहानियां संकलित हैं, जिससे पाठक एक ही स्थान पर प्रवासी कहानियों का आनन्द ले सकें। इस कहानी–संकलन में 44 कहानियॉ हैं, जो अमेरिका, आबूधाबी, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, जापान, डेनमार्क, नार्वे तथा मॉरिशस के प्रवासी एवं भारतवंशी लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। इन कहानियों का संसार बड़ा व्यापक हैं जो भरत के साथ भारतेतर देशों तक फैला हुआ हैं। यह एक ऐसा साहित्यिक संसार हैं, जो भारत के पाठक से लगभग अपरिचित ही था इन कहानियों में नया भारतीय संसार हैं नई अनुभूतियां और संवेदनाएँ हैं; जीवन को देखने समझने का नया दृष्टिकोंण हैं, दो मित्र संस्कृतियों में जीने के संघर्ष और उनके सम्मिलन एवं द्वन्द्व को साकार करने की सफल चेष्ठा हैं।

'हिन्दी प्रवासी–साहित्य' के इस तीसरे खण्ड 'कविता' में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, खाड़ी देश दुबई, जर्मनी, डेनमार्क, नार्वे, नीदरलैण्ड, फीजी मॉरिशस तथा सूरीनाम आदि 12 देशों ने 90 कवियों की कविताएँ संकलित हैं। इन कवियों को मुख्यतः दो भागों मे बॉटा जा सकता हैं– गिरमिटिया देशों के कवि–अर्थात् फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम आदि देशों के कवि तथा अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया आदि पूँजीपति देशों के कवि, जो स्वेच्छा से बेहतर जीवन के लिए वहॉ गए।

'हिन्दी का प्रवासी साहित्य' पुस्तक में प्रवासी–साहित्य का अपना एक वैशिष्ट्य हैं जो अपनी संवेदना, जीवन–दृष्टि, सरोकार तथा परिवेश में दिखाई देता हैं। हिन्दी का पाठक इससे समृद्ध हुआ हैं। उसे हिन्दी के माध्यम से वैश्विक चेतना की अनुभूति करने का अवसर मिला ।

गोयनका जी की 'विश्व हिन्दी रचना' के प्रकाशन का मूल उद्देश्य यही हैं कि भारतेतर देशों में भारतवंशी अप्रवासी हिन्दी लेखकों ने जो अपने हिन्दी प्रेम तथा हिन्दी निष्ठा से हिन्दी में सर्जनात्मक साहित्य का छोटा सा किन्तु विश्व में चारों और फैला हुआ आकाश निर्मित किया हैं, उसे विश्व के हिन्दी मंच पर प्रस्तुत किया जायें और हिन्दी संसार को बताया जायें की तुफानों–आंधियों और भयंकर बाधाओं के बाउजूद हमनें भी हिन्दी की एक छोटी सी दुनिया बनाई हैं यह दुनिया प्रत्येक देश की अपनी हैं परन्तु उसकी आत्मा हिन्दी की और भारतीयता की हैं जिन देशों में भारतीय मजदूर शर्तबन्दी के आधार पर गये हैं उसके भारतीय वंशजों की हिन्दी रचनाओं में हिन्दी, हिन्दु और हिन्दुस्तान के साथ स्थानीय मिट्टी की सुंगध भी मिलेगी। इन देशों में सर्वाधिक फीजी, मॉरिशस, त्रिनिडाड, सूर्यनाम आदि देश सम्मिलित हैं जहॉ हिन्दी का सर्वाधिक साहित्य रचा गया हैं। इस हिन्दी साहित्य में अतिथि व्यथा और गूंगा इतिहास, वर्ममान में तनाव और संस्कृतियों का द्वन्द्व तथा भविष्य की चिन्ताओं का प्रमुखता से चित्रण हुआ हैं।

अमेरिका, इंग्लैण्ड, नार्वे, डेनमार्क, नीदरलैण्ड, आदि देशों के भारतवंशी हिन्दी लेखकों की चिंताओं और चुनौतिया इनसे कुछ भिन्न हैं ये हिन्दी लेखक प्रायः वे हैं जो 20वीं शताब्दी में धनार्जन, शिक्षा तथा व्यवसाय के लिए इन देशों में गये थें। वे अमेरिका में रहते हुए न तो अमेरिकी संस्कृति के अंग बन पाये और न शुद्ध रूप से भारतीय ही रह पाये इन भारतवंशी परिवारों की नई पीढ़ी तो भारतीय होने की अपेक्षा अमेरिकी बनने के लिए लालायित हो गयी जिससे इन भारतवंशी परिवारों की पुरानी पीढ़ियों में अपनी जड़ों को लौटने की आकांक्षा उत्पन्न हुई।

भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दौर में तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में भारतीय समाज में अपने स्वत्व स्वपहचान और अपनी अस्मिता जानने का जो जागरण शुरू हुआ था कुछ वैसा ही

भारतीय जागरण इन भारत वंशी अप्रवासी हिन्दी लेखकों की रचनाओं में दृष्टिगत होता हैं। अन्तर हैं तो यही की दोनों की देशी परिस्थितयों और भौतिक जीवन–शैली में जमीन आसमान का अन्तर आ गया हैं परन्तु दोनों में ही अपने स्वत्व की पहचान के साथ भारतीयता से जुड़ने की व्याकुलता दिखाई देती हैं। गोयनका जी ने लिखा हैं कि प्रेम चन्द की सन् 1908 में प्रकाशित कहानी 'यही मेरी मातृभूमि हैं' का उल्लेख किया हैं। इस कहानी में एक भारतीय कई दशकों तक अमेरिका में रहते हुए अपरिमित धन कमाता हैं परन्तु धन–वैभव, सुख–सुविधा और परिवारिक उल्लास–प्रेम आदि के मोह को तोड़कर अपनी मातृभूमि भारत के आकर्षण में बंधा हुआ अपने देश को लौटा हुआ आता हैं और गंगा के किनारे रहते हुए जीवन व्यतीत करना चाहता हैं। कुछ ऐसी ही भारतीयता अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशों की रचनाओं में मिलती हैं, परन्तु अब अमेरिका से आज का भारतीय अपनी मातृभूमि को नही लौटता। वह विदेश में रहते हुए भी भारत को जीता हैं और विदेश–स्वदेश के द्वन्द्व से पीड़ित होता हैं, इन हिन्दी लेखकों की यह भारतीय चेतना ही उन्हें अपने देश और अपनी पहचान से जोड़ती है और इसका आधार बनती हैं।

गोयनका जी 'विश्व हिन्दी रचना' में लिखते हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी की यह पंक्ति सार्थक लगती हैं जिसमें वे कहते हैं, ''हिन्दी हमें स्वत्वों से जोड़ती हैं, भारतीय की ओर मोड़ती हैं और संकीर्णता को तोड़ती हैं।''

हिन्दी भाषा और साहित्य आरम्भ से ही सभी प्रकार की संकीर्णताओं और भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाता रहा हैं भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम' ही हिन्दी का प्राण तत्व हैं। जब सारी पृथ्वी ही हमारी कुटुम्ब हैं तो धर्म, क्षेत्र भाषा आदि की सीमाएँ और भेदभाव स्वतः ही समाप्त हो जाता हैं मध्य युग में कबीर से लेकर आज तक का हिन्दी साहित्य भेद रहित संकीर्णताओं से मुक्त समाज की रचना का स्वप्न देखता रहा हैं। हिन्दी भाषा अब अपनी क्षैत्रीय परिधि से निकलकर पूरे भारत देश की भाषा हैं। पूरा भारत हिन्दी में समाया हैं और बंगाली, मराठी, पंजाबी, तमिल, हिन्दी लेखक अब पूर्णतः हिन्दी के ही लेखक हैं इस तरह हिन्दी ने भारत में एक निश्चित परिधि में रहने की संकीर्णता को तोड़ा हैं और देश के विभिन्न अहिन्दी प्रान्तों के हिन्दी लेखकों को भी समुचित स्थान देने का प्रयत्न किया हैं।

विश्व हिन्दी रचना शीर्षक से प्रकाशित यह ग्रन्थ अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान, त्रिनिडाड, फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम आदि देशों में भारतवंशी अप्रवासी हिन्दी लेखकों की साहित्य रचनाओं का यह पहला संकलन हैं जो इसका प्रमाण हैं कि भारत में ही नही विश्व–मंच पर अब भारत के साथ भारतेतर देशों में रचे गये हिन्दी साहित्य को भी समान महत्व दिया जायेगा। तथा इसका प्रयत्न किया जायेगा कि भारतेतर देशों का यह हिन्दी साहित्य भी हिन्दी साहित्य के इतिहास का अंग बने और भारत और भारतेतर देशों के पाठ्यक्रमों में भी इसका उचित प्रतिनिधित्व हो। आज के भूमण्डलीकरण के दौर में संचार तकनीक से विश्व को एक सूत्र में जोड़ दिया हैं, किन्तु साहित्य अपने कृतियों व मानवीय संवेदनाओं से विश्व को एक करता हैं साथ ही गोयनका जी ने लिखा हैं कि भारतवंशियों के हिन्दी साहित्य को भी हमें यही सम्मान देना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी के प्रवासी साहित्य की एक समृद्ध परंपरा है तथा यह भी ध्यान देने की बात है कि हिन्दी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदना व प्रवृत्ति में भिन्न है। प्रवासी हिन्दी साहित्य को पहचान दिलाने में डॉ. कमल किशोर गोयन का का योगदान अविस्मरणीय है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य निश्चय ही हिन्दी के प्रवासी साहित्य तथा उसके विकास में डॉ.कमल किशोर गोयना का के योगदान को रेखांकित करना है।

निष्कर्ष

यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्रवासी साहित्य को पहचान एव सम्मान दिलाने में डॉ. कमल किशोर गोयन का योगदान अद्वितीय है। इस प्रवासी हिन्दी साहित्य से न केवल हिन्दी का साहित्य समृद्ध हुआ है अपितु हिन्दी को विश्व पटल पर भी पहचान मिली है। यह साहित्य प्रवासी साहित्यकारों का हिन्दी और मातृभूमि के लिए न केवल प्रदेय है अपितु एक अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान का भी माध्यम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. गंगू उदयनारायण, मॉरिशस की संस्कृति और साहित्य, प्रकाशन – यश पब्लिकेशन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या 60 ।*
2. *सुधा ढींगरा ओम, वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ, प्रकाशन–शिवना प्रकाशन, सीहोर, (मध्यप्रदेश), प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या –81*
3. *ठाकुर स्नेह, पूरब–पश्चिम, प्रकाशन–स्टान पब्लिकेशंस प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या –64 ।*
4. *हिन्दी का प्रवासी साहित्य (खण्ड –1 कविता) संपादक– गोयनका कमल किशोर, यश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण जनवरी 2017, पृष्ठ संख्या –6 ।*
5. *हिन्दी का प्रवासी साहित्य खण्ड–3 (कहानी) संपादक – गोयन का कमल किशोर, यश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या–2 ।*
6. *हिन्दी का प्रवासी साहित्य खंड़ 3 (गद्य–विद्याएँ) सम्पादक–कमल किशोर गोयनका यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ 3 ।*
7. *वहीं पृष्ठ संख्या–65 ।*
8. *वर्मा विमलेश कान्ति पुस्तक–: प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ लोधी रोड़, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016 ।*
9. *गोयनका कमल किशोर मॉरिशस के हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत से बातचीत प्रकाशक ईशा ज्ञान दीप नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 ।*
10. *वर्मा विमलेश कान्ति पुस्तक फिजी का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, प्रकाशक साहित्य अकादमी नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2012।*

11. राय डॉ. अजीत कुमार पुस्तक–गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन, प्रकाशक यश पब्लिकेशनस शाहदरा, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2015 ।
12. निधि हीरामन, प्रवासी भारतीय साहित्य श्रृंखला, प्रकाशक। स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012 ।
13. डा0 गोयनका कमलकिशोर, संपादकय, प्रवासी साहित्य जोहांस बर्ग से आगे विदेश मंत्रालय भारत सरकार–2015 ।
14. डा0 गोयनका कमलकिशोर ,संपादक हिन्दी भाषा स्वरुप शिक्षण वैश्विकता, भारतीय पुस्तक न्यास ,नई दिल्ली ।
15. साहित्य अमृत सितम्बर नई दिल्ली. –2015 ।